International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 10 Issue 3 Ser. II || March 2021 || PP 76-86

दौसा जिले में लघु व कुटीर उद्योग से आर्थिक सामाजिक परिदृश्य पर प्रभाव

बनवारी लाल सैनी , *शोधार्थी , राजऋषि भर्तृहरि मत्स्य विश्वविद्यालय , अलवर (राज.) 301001*

डॉ. रवीन्द्र कुमार मिश्रा, *सह आचार्य, बाबू शोभा राम राजकीय कला महाविद्यालय , अलवर (राज.) 301001*

शोध सारांश :–

प्रस्तुत शोध कार्य में "लघु व कुटीर उद्योग से आर्थिक सामाजिक परिदृश्य पर प्रभाव" विषय का चयन किया गया है इस विषय के चयन का कारण अध्ययन क्षेत्र दौसा ज़िले का सामाजिक व आर्थिक विकास की दृष्टि से पिछड़ा हुआ था । सन 1991 से पूर्व अध्ययन क्षेत्र जयपुर जिले में शामिल था तब ज़िले में लघु व कुटीर उद्योग पर्याप्त मात्रा में विकसित नही थे लेकिन अप्रेल 1991 के बाद दौसा ज़िले के निर्माण के बाद धीरे धीरे ज़िले में लघु व कुटीर उद्योगों को बढ़ावा मिला । अध्ययन क्षेत्र में औद्योगिक विकास के साथ साथ आर्थिक विकास हुआ जिससे यहाँ के निवासियों के सामाजिक जीवन स्तर में परिवर्तन आया इन कारणों के अतिरिक्त इस अध्ययन क्षेत्र के चयन में वैयक्तिक व निदेशकीय अभिरूचि की भी निर्णायक भूमिका रही है। साथ ही शोधार्थी दौसा जिले का मूल निवासी भी है।प्रस्तुत शोध पत्र में लघु व कुटीर उद्योगों के सामाजिक व आर्थिक परिदृश्य पर प्रभावों का विश्लेषण किया गया है । अध्ययन क्षेत्र में औद्योगिक विकास का सकारात्मक प्रभाव पड़े है जिसका अध्ययन इस शोध में किया गया है ।

मुख्य बिन्दु :– कुटीर उद्योगों की स्थिति , कुटीर उद्योगों का विश्लेषण, लघु उद्योगों का विश्लेषण, उद्योगों में कमी व वृद्धि के कारण, सामाजिक व आर्थिक विकास, औद्योगिक विकास, सुझाव व निष्कर्ष ।

अध्ययन क्षेत्र का परिचय :–

अध्ययन क्षेत्र अर्थात् दौसा जिला राजस्थान राज्य के पूर्वी भाग में अवस्थित है जिसका अक्षांशीय विस्तार 26 डिग्री 23 मिनट से 27 डिग्री 15 मिनट उत्तरी अक्षांश तथा देशान्तरीय विस्तार 76 डिग्री 07 मिनट से 77 डिग्री 02 मिनट पूर्वी देशान्तर के मध्य है। जिले की औसत समुद्र तल से ऊँचाई 333 मीटर (1072 फुट) है। दौसा शहर जिले का प्रशासनिक मुख्यालय है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार जिले की कुल जनसंख्या 16.34 लाख है। जनसंख्या की दृष्टि से जिले का राज्य में 20 वॉ स्थान है। पूर्व में यह जयपुर जिले का उपखण्ड मुख्यालय था। 30 अप्रेल 1991 को इसे अलग से जिले का दर्जा मिला तथा राजस्थान का 29 वॉ जिला बना । दौसा जिले का लिंगानुपात 905 प्रति हजार तथा जनघनत्व 476 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है। जो राज्य में तीसरा सर्वाधिक जनघनत्व वाला जिला है। जिले का कुल क्षेत्रफल 3482 वर्ग किलोमीटर है। दौसा जिले की सीमाएँ अलवर, करौली, सवाईमाधोपुर, टोंक, भरतपुर और जयपुर जिले के साथ संलग्न है। दौसा जिले की सीमा किसी भी राज्य तथा देश के साथ नही लगती है। दौसा को ढूंढाड़ राज्य की प्रथम राजधानी बनने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ । जिले के उत्तरी भाग में अरावली पर्वत श्रेणी का विस्तार है। दौसा जिले की प्रमुख नदियों में बाणगंगा तथा मोरेल नदी है जिनके चारों और 36 बाँधों का निर्माण किया गया है । परन्तु वर्तमान में अधिकांश बांध सूख गये है। जिले के प्रमुख बाँधों में माधोसागर बाँध एवं रेहड़ियां बाँध है। ग्रीष्मकाल में यहाँ का तापमान 43° तथा शीतकाल में 10° तक रहता है। जिले में औसत वार्षिक वर्षा 740.7 मिलीमीटर होती है सर्वाधिक औसत वार्षिक वर्षा लालसोट में (998.0 मिलीमीटर) तथा सबसे कम वार्षिक वर्षा महुवा में (542.5 मिलीमीटर) होती है। दौसा जिले की मृदा हल्की भूरी एंव पीली है।

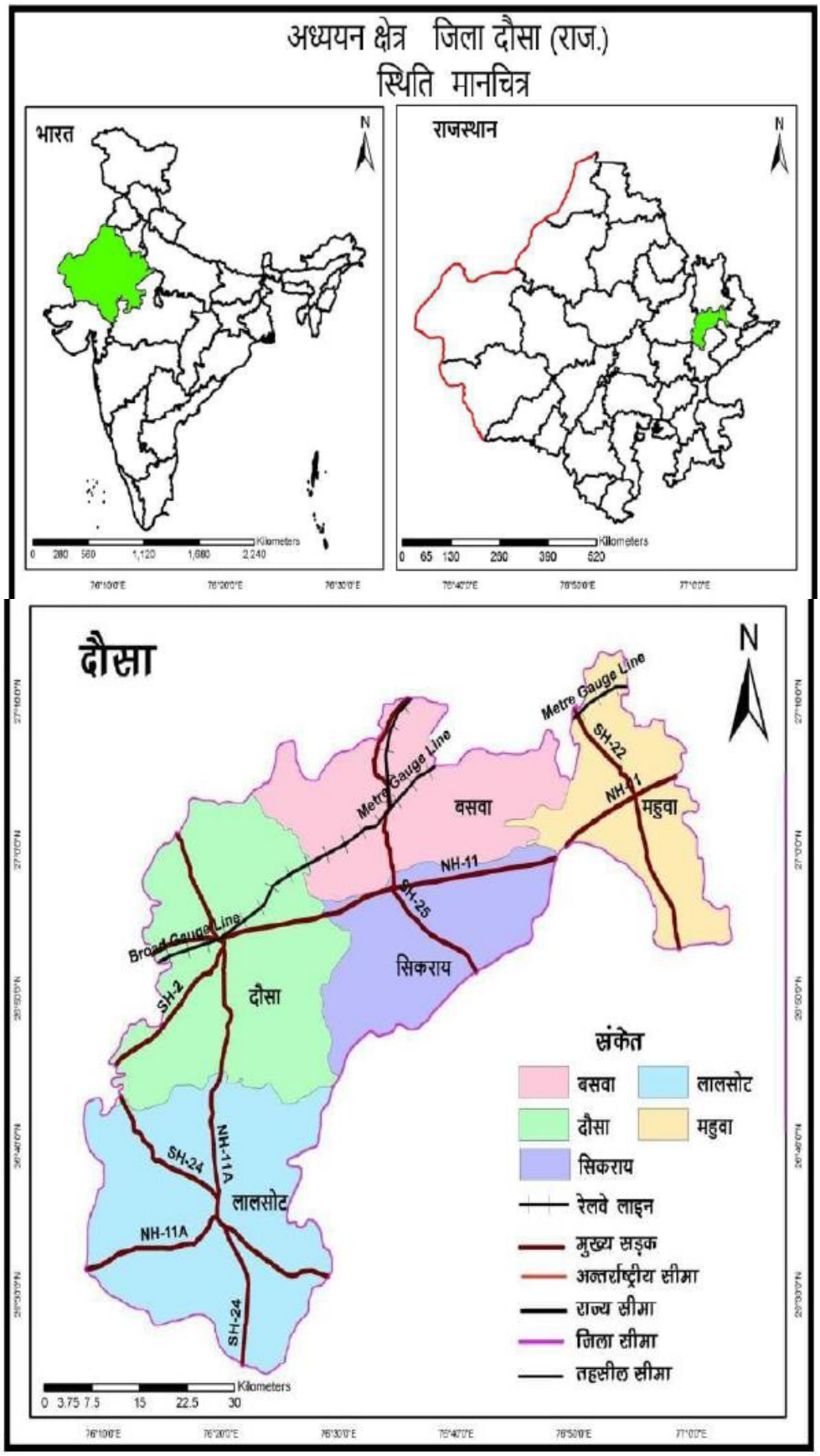

अध्ययन क्षेत्र जिला दौसा (राज.)
स्थिति मानचित्र
भारत
N
Kilometers
0 280 560 1,120 1,680 2,240
राजस्थान
N
Kilometers
0 65 130 260 390 520
दौसा
N
Metre Gauge Line
Metre Gauge Line
Broad Gauge Line
SH-22
NH-11
NH-11
SH-25
SH-2
SH-24
NH-11A
NH-11A
SH-24
बसवा
महुवा
सिकराय
दौसा
लालसोट
संकेत
बसवा
लालसोट
दौसा
महुवा
सिकराय
रेलवे लाइन
मुख्य सड़क
अन्तर्राष्ट्रीय सीमा
राज्य सीमा
जिला सीमा
तहसील सीमा
Kilometers
0 3.75 7.5 15 22.5 30

शोध कार्य के उद्देश्य :–

1. दौसा जिले में लघु व कुटीर उद्योगों की स्थिति को स्पष्ट किया गया ।

2. उद्योगों का आर्थिक–सामाजिक विकास पर प्रभाव को स्पष्ट किया गया है ।

शोध परिकल्पना :–

लघु एंव कुटीर उद्योगों से मानवीय जीवन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।

विधितन्त्र :–

प्रस्तुत शोध कार्य में प्राथमिक व द्वितीयक आंकड़ो का उपयोग किया गया है । आंकड़ो के विश्लेषण हेतु सारणी , आरेख व मानचित्रों का उपयोग किया गया । अध्ययन में तुलनात्मक विधितन्त्र उपयोग किया गया है जिसके अंतर्गत कुटीर व लघु उद्योगों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है ।

अध्ययन क्षेत्र में उद्योग :–

दौसा जिले में औद्योगिक विकास जुलाई 1992 से प्रारम्भ हुआ। उस समय केवल जिला मुख्यालय पर ही उधोग विकसित थे। 31 मार्च 2015 तक जिले में कुल 3497 लघु तथा मध्यम उधोग पंजीकृत थे। जिनका कुल पूँजीनिवेश 5171. 00 लाख रूपये था। जिसमें 13201 श्रमिक कार्यरत थे। वर्ष 2017–18 में कुल पंजीकृत लघु उधोग 1332 थे जिनमें कुल विनियोजन 11693.00 लाख रूपये था। इन उद्योगों को लगभग 19 राष्ट्रीयकृत बैंक ऋण उपलब्ध करवाते है। इन उद्योगों को कच्चे माल की प्राप्ति स्थानीय व दूर दराज के क्षेत्रों से होती है। तैयार माल को भारत के विभिन्न क्षेत्रो में भेजा जाता है। इन उद्योगों में डोलोमाइट पाउडर, क्वार्टज पाउडर, प्लास्टिक पाईप, मार्बल कटिंग, स्टोन कटिंग, फर्नीचर, आटा एंव दाल, तेल मील, स्टोन लैम्प, मन्दिर , मूर्तियाँ, जाली, फ्लॉवर पॉट, सजावटी समान, फूलों के गुलदस्ते, अगरबत्ती, मोमबत्ती, मूर्तिकला, जूट व दरी उत्पाद, चमड़े के जूते व जूतियां आदि बनाने का कार्य किया जाता है।

सारणी संख्या :- 1.1

दौसा जिले में हस्तशिल्प उद्योग 2011

क्र. स.	उद्योग	क्षेत्र	श्रमिक उपलब्धता	प्रमुख उत्पाद
1.	सैंड स्टोन	सिकन्दरा से मानपुर तक N.H. 11	प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से 25000 श्रमिक	स्टोन लैम्प, मन्दिर , मूर्तियाँ, जाली, फ्लॉवर पॉट, सजावटी समान आदि
2.	हैंडलूम	लवाण	1500 श्रमिक	जूट एवं दरी उत्पाद
3.	लैदर	भाण्डारेज, गुढ़लिया, अलूदा, बिशनपुरा, दुब्बी, कुण्डल, रामपुरा एवं पीपलखेड़ा ।	600 परिवारों के 2500 श्रमिक	जूते एवं जूतियां
4.	पीतल, तांबा व जिंक	बालाहेड़ी	100 परिवारों के 300 श्रमिक	फूलों के गुलदस्ते, अगरबत्ती, मोमबत्ती, मूर्तिकला आदि

स्त्रोत :- जिला उद्योग पोर्टल , दौसा ।

सारणी संख्या :- 1.2

दौसा जिले के औद्योगिक क्षेत्र 2011

क्र.स.	औद्योगिक क्षेत्र	अवस्थिति	कुल उपलब्ध भूमि (एकड़ में)	कुल औद्योगिक भू-खण्ड	संचालित उद्योग
1.	दौसा	N.H. 11	27.28	92	61
2.	डीडवाना (लालसोट)	दौसा से 35 किलोमीटर दूर दौसा-लालसोट सड़क मार्ग पर	100.00	182	77
3.	बापी (दौसा)	N. H. 11 पर दौसा से 12 किलोमीटर की दूरी पर	146.10	108	74
4	बगोलाना (बांदीकुई)	अलवर बांदीकुई राजमार्ग पर	71.31	132	55

स्त्रोत :- जिला उद्योग पोर्टल , दौसा ।

अध्ययन क्षेत्र में कुटीर उद्योगों की स्थिति :–

दौसा ज़िले में सन 1991 से 2019 तक कुटीर उद्योगों की स्थिति में उत्तरोत्तर विकास हुआ है । वर्ष 2020 में कोरोना महामारी के फैलने से लॉक डाउन के कारण बहुत अधिक कुटीर उद्योग बन्द हो गए लेकिन 2021 में पुनः इनकी सँख्या में वृद्धि हो गई ।

सारणी संख्या :- 1.3

दौसा जिले में कुटीर उद्योगों की संख्या (1991-2021)

क्र. स.	वर्ष	दौसा जिला
1	1991	30
2	1992	41
3	1993	49
4	1994	56
5	1995	77
6	1996	92
7	1997	96
8	1998	116
9	1999	133
10	2000	142
11	2001	164
12	2002	189
13	2003	221
14	2004	241
15	2005	275
16	2006	309
17	2007	338
18	2008	355
19	2009	378
20	2010	390
21	2011	404
22	2012	417
23	2013	443
24	2014	469
25	2015	494
26	2016	539
27	2017	608
28	2018	649
29	2019	691
30	2020	321
31	2021	527

स्त्रोत :- जिला उद्योग केन्द्र ,दौसा ।

आरेख संख्या :- 1.1

दौसा जिले में कुटीर उद्योगों का वितरण (1991-2021)

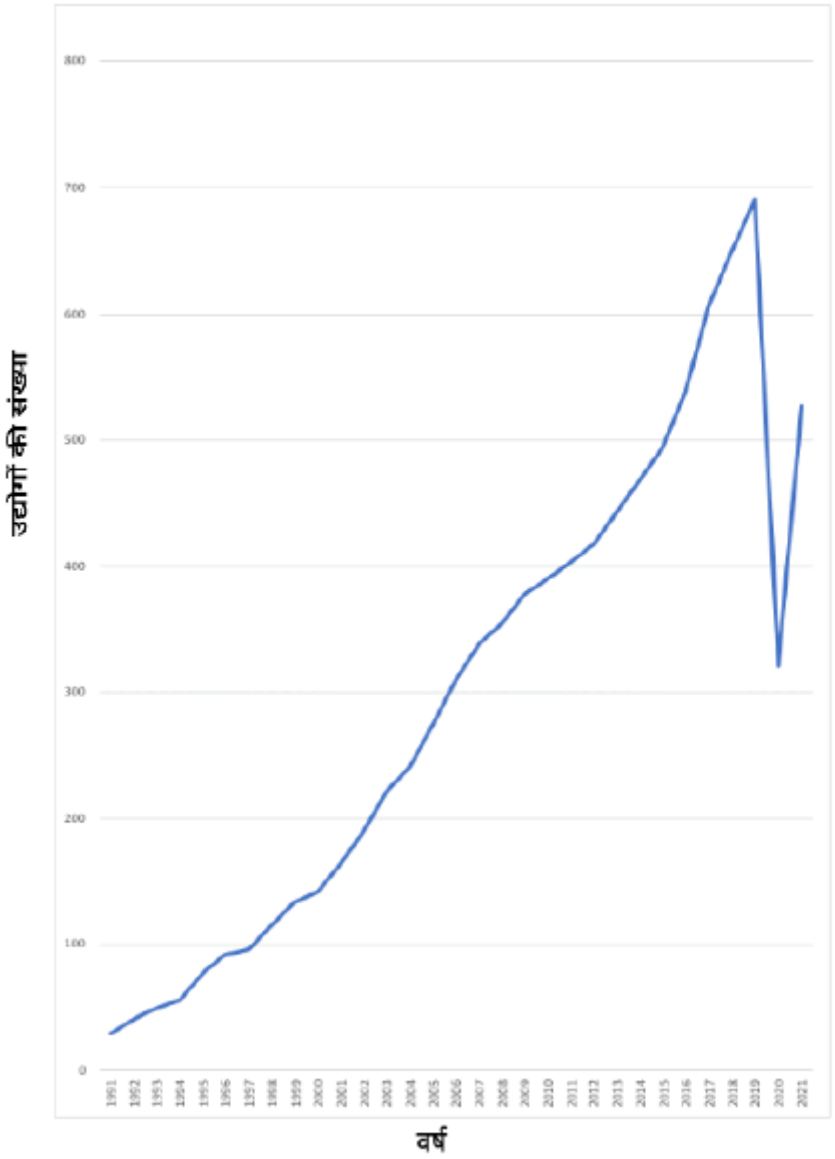

स्त्रोत :- जिला उद्योग केन्द्र ,दौसा ।

अध्ययन क्षेत्र में कुटीर उद्योगों का विश्लेषण :–

अध्ययन क्षेत्र में 1991 में 30 कुटीर उद्योग विकसित थे जो 1995 में बढ़कर 77 हो गए । इसी प्रकार सन 2000 में बढ़कर 142 व 2005 में बढ़कर 275 हो गए । सन 2010 में कुटीर उद्योग बढ़कर 390 व सन 2015 में बढ़कर 494 हो गए । वर्ष 2019 में कुटीर उद्योगों की कुल सँख्या बढ़कर 691 हो गई लेकिन वर्ष 2020 में कोरोना महामारी के समय उद्योगों की संख्या घटकर 321 रह गई जो 2021 में पुनः बढ़कर 527 हो गई । अध्ययन क्षेत्र के सामाजिक व आर्थिक विकास पर कुटीर उद्योगों का सकारात्मक प्रभाव पड़ा है । कुटीर उद्योगों का विकास होने से रोजगार के अवसरों में वृद्धि हुई है जिससे सामाजिक व आर्थिक उन्नति हुई है ।

सारणी संख्या :- 1.4

दौसा जिले में लघु उद्योगों की संख्या (1991-2021)

क्र. स.	वर्ष	उद्योगों की सं.
1	1991	10
2	1992	15
3	1993	20
4	1994	24
5	1995	31
6	1996	34
7	1997	32
8	1998	40
9	1999	44
10	2000	51
11	2001	56
12	2002	60
13	2003	63
14	2004	66
15	2005	74
16	2006	80
17	2007	88
18	2008	92
19	2009	99
20	2010	106
21	2011	113
22	2012	122
23	2013	127
24	2014	133
25	2015	137
26	2016	149
27	2017	160
28	2018	170
29	2019	183
30	2020	93
31	2021	142

स्त्रोत :- जिला उद्योग केन्द्र ,दौसा

अध्ययन क्षेत्र में लघु उद्योगों का विश्लेषण :–

अध्ययन क्षेत्र दौसा जिले में लघु उद्योगों की स्थिति को सारणी सँख्या 4 में दर्शाया गया है जिसके अध्ययन से स्पष्ट है कि दौसा ज़िले में सन 1991 से 2019 तक कुटीर उद्योगों की स्थिति में उत्तरोत्तर विकास हुआ है । वर्ष 2020 में कोरोना महामारी के फैलने से लॉक डाउन के कारण बहुत अधिक लघु उद्योग बन्द हो गए लेकिन 2021 में पुनः इनकी सँख्या में वृद्धि हो गई ।अध्ययन क्षेत्र में 1991 में 10 लघु उद्योग विकसित थे जो 1995 में बढ़कर 31 हो गए । इसी प्रकार सन 2000 में बढ़कर 51 व 2005 में बढ़कर 74 हो गए । सन 2010 में लघु उद्योग बढ़कर 106 व सन 2015 में बढ़कर 137 हो गए । वर्ष 2019 में लघु उद्योगों की कुल सँख्या बढ़कर 183 हो गई लेकिन वर्ष 2020 में कोरोना महामारी के समय उद्योगों की संख्या घटकर 93 रह गई जो 2021 में पुनः बढ़कर 142 हो गई । अध्ययन क्षेत्र के सामाजिक व आर्थिक विकास पर लघु उद्योगों का सकारात्मक प्रभाव पड़ा है । लघु उद्योगों का विकास होने से रोजगार के अवसरों में वृद्धि हुई है जिससे सामाजिक व आर्थिक उन्नति हुई है लेकिन अध्ययन क्षेत्र दौसा जिले में लघु व कुटीर उद्योगों को अनेकों समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है जिसके समाधान हेतु राज्य सरकार को आर्थिक अनुदान करके उद्योगों को प्रोत्साहित करना चाहिए ।

आरेख संख्या :- 1.2

दौसा जिले में लघु उद्योगों का वितरण (1991-2021)

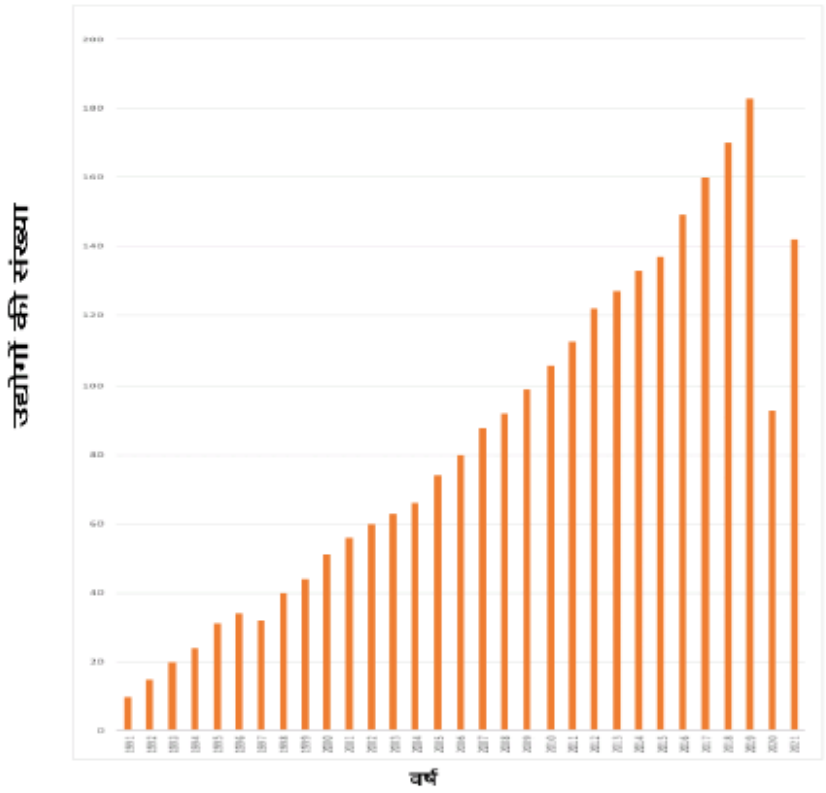

स्त्रोत :- जिला उद्योग केन्द्र ,दौसा ।

उद्योगों में वृद्धि के कारण :–

अध्ययन क्षेत्र दौसा ज़िले में उद्योगों में वृद्धि होने का मुख्य कारण राष्ट्रीय राजमार्ग सँख्या 11 पर बसे होने के कारण यातायात एवं परिवहन की सुविधाएं विकसित होना है । औद्योगिक विकास के दूसरा प्रमुख कारण राजधानी क्षेत्र जयपुर के अधिकांश उद्योग निकटवर्ती दौसा ज़िले में स्थानांतरित होना है । उद्योगों के विकास का तीसरा कारण रीको द्वारा औद्योगिक विकास को प्रोत्साहन देना है । अध्ययन क्षेत्र में लघु व कुटीर उद्योगों के विकास का अन्य कारण निकटवर्ती बाजार उपलब्ध होना है ।

उद्योगों की कमी के कारण :–

अध्ययन क्षेत्र दौसा ज़िले में उद्योगों की कमी होने का कारण राज्य सरकार द्वारा उद्योगों के प्रोत्साहन हेतु विशेष एवं दूरगामी योजनाओं का अभाव होना है । अध्ययन क्षेत्र के ग्रामीण क्षेत्र व उप तहसील मुख्यालय पर परिवहन सुविधाओं की सुचारू व्यवस्था नही है । ग्रामीण क्षेत्रों में विकसित कुटीर व लघु उद्योगों हेतु सस्ता एवं कुशल श्रम उपलब्ध नही हो पाता है ।

अध्ययन क्षेत्र में सामाजिक व आर्थिक विकास :–

भूतल पर जनसंख्या के वितरण में आदिकाल से लेकर वर्तमान काल तक परिवर्तन होता रहा है। यद्यपि परिवर्तन की गति एवं दिशा देश काल के अनुसार भिन्न भिन्न रही है। जिले के विभिन्न भागों में जनसंख्या का वितरण अत्यधिक विषम है। जहाँ एक और मानव निवास के लिए उपयुक्त स्थल खण्डों पर अत्यधिक जनसंख्या का जमाव हो गया है, वहीं दूसरी और बड़े बड़े भूखण्ड मनुष्य के लिए अनुपयुक्त होने के कारण पूर्णतया या आंशिक रूप से निर्जन है।

जिले की स्थिति, औद्योगीकरण, यातायात मार्गों की सुगमता व सम्बन्धता के कारण जनसंख्या घनत्व व वितरण में भी वृद्धि देखी गई है। औद्योगीकरण सिकन्दरा सिकराय, महुआ, बसवा व बांदीकुई में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।

दौसा जिला क्षेत्रीय आधार पर एक वृहद जिला है जहाँ पर भौतिक, आर्थिक व सामाजिक विषमताएँ विद्यमान हैं। शोध द्वारा इस निष्कर्ष पर पहुँचा गया है कि जो क्षेत्र औद्योगिक, कृषि उत्पादों द्वारा सम्पन्न है वहाँ आर्थिक समृद्धि देखी गई है जबकि जिले के कुछ क्षेत्र जैसे लालसोट , लवाण , नांगल राजावतान एवं रामगढ़ पंचवारा आर्थिक व सामाजिक रूप से पिछड़ा हुआ है। अध्ययन द्वारा विभिन्न मानकों को आधार मानकर परिकल्पना परीक्षण किया है।

अध्ययन क्षेत्र में उद्योगों के विकास से दौसा ज़िले में गाँवों में विभिन्न सुविधाएं के विकास में परिवर्तन को दर्शाया गया है अध्ययन स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में 2001 की तुलना में 2011 में शिक्षा , चिकित्सा , पेयजल , पोस्ट ऑफिस , टेलीफोन , परिवहन , बैंकिंग , कृषि , विद्युत वितरण एवं ग्रामीण सड़क में विकास एवं परिवर्तन देखने को मिला है ।

शैक्षणिक सुविधा :–

किसी भी क्षेत्र में सामाजिक व आर्थिक परिवर्तन लाने के लिए शिक्षा मुख्य आधार है। अध्ययन से स्पष्ट है कि वर्ष 2001 से 2011 के मध्य प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च माध्यमिक व महाविद्यालय स्तर पर शैक्षणिक संस्थाओं में कमी हुई है। दौसा जिले में वर्ष 2001 में 877 गाँवों में शिक्षा का विकास था जो कि वर्ष 2011 में घटकर 806 गाँवों में ही रह गया जिसका मुख्य कारण राज्य सरकार के द्वारा प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों का समायोजन करना था । अध्ययन क्षेत्र में उद्योगों की संख्या में वृद्धि हुई उसके साथ ही शिक्षा सुविधाओं का भी विकास हुआ है ।

वर्ष 2001 में अध्ययन क्षेत्र में पंचायत समिति लालसोट (231) व बाँदीकुई (195) में शिक्षा का उच्च विकास स्तर मिलता है । दौसा (188) में मध्यम विकास स्तर मिलता है । महुवा (134) व सिकराय (129) में शिक्षा का निम्न विकास स्तर मिलता है । वर्ष 2011 में अध्ययन क्षेत्र में पंचायत समिति लालसोट (188) व दौसा (188) में शिक्षा का उच्च विकास स्तर मिलता है । बाँदीकुई (181) में मध्यम विकास स्तर मिलता है । महुवा (132) व सिकराय (117) में शिक्षा का निम्न विकास स्तर मिलता है । अध्ययन से स्पष्ट है कि दौसा जिले में गाँवों में शैक्षणिक संस्थाओं का विकास वर्ष 2001 की तुलना में वर्ष 2011 में कम रहा है।

स्वास्थ्य सेवाएँ :–

सामाजिक कल्याण और मानव विकास के लिए गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएँ उपलब्ध होनी चाहिए। इस हेतु चिकित्सा सुविधाऐं व्यक्ति की जीवन प्रत्याशा को बढाती है तथा जनसंख्या के गुणात्मक पक्ष में वृद्धि करती हैं। वर्ष 1991 में अध्ययन क्षेत्र में 145 गाँवों में चिकित्सा सुविधा प्राप्त थी जो वर्ष 2001 में बढ़कर 217 हो गए । इसी प्रकार वर्ष 2011 में बढ़कर 321 गाँवों में चिकित्सा सुविधाओं का विकास हुआ । यहाँ दौसा , महुवा और लालसोट में अपेक्षाकृत अधिक वृद्धि देखी गयी है । अध्ययन क्षेत्र में लघु एवं कुटीर उद्योगों की संख्या में वृद्धि हुई उसके साथ ही चिकित्सा सुविधाओं का भी विकास हुआ है ।

पेयजल सुविधा :–

अध्ययन क्षेत्र दौसा जिले में वर्ष 1991 में पेयजल सुविधा से लाभान्वित होने वाले गाँवों की संख्या 327 थी जो दस वर्ष बाद 2011 में बढ़कर 1006 एवं 2011 में 1077 गाँव पेयजल सुविधा प्राप्त हो चुके हैं। अध्ययन क्षेत्र में उद्योगों की संख्या में वृद्धि हुई उसके साथ ही पेयजल सुविधाओं का भी विकास हुआ है । यहाँ सर्वाधिक परिवर्तन लालसोट, दौसा एवं बांदीकुई पंचायत समितियों में देखा गया है। महुवा एवं सिकराय पंचायत समितियों में पेयजल सुविधाओं का विकास स्तर निम्न रहा है ।

डांक तार सुविधा :–

वर्तमान संचार क्रांति से डांक व तार में भी वृद्धि देखी गई है। वर्ष 1991 में 118 गाँव इस सुविधा से जुड़े हुए थे। 2001 में 201 गाँव डांक सुविधा प्राप्त कर चुके हैं। वहीं वर्ष 2011 में औद्योगिक विकास के परिणाम स्वरूप 374 गाँव डांक सुविधा प्राप्त कर चुके हैं। यहाँ डांक सुविधाओं में सर्वाधिक वृद्धि लालसोट, दौसा एवं बांदीकुई पंचायत समितियों में हुई। महुवा एवं सिकराय पंचायत समितियों में डांक सुविधाओं का विकास स्तर निम्न रहा है । अध्ययन क्षेत्र में उद्योगों की संख्या में वृद्धि हुई उसके साथ ही डांक तार सुविधाओं का भी विकास हुआ है ।

टेलीफोन सुविधा :–

अध्ययन क्षेत्र दौसा जिले में संचार क्रांति से टेलीफोन सुविधाओं में भी वृद्धि देखी गई है। वर्ष 1991 में 148 गाँव टेलीफोन सुविधा से जुड़े हुए थे। 2001 में 313 गाँव दूरभाष सुविधा प्राप्त कर चुके हैं। वहीं वर्ष 2011 में औद्योगिक विकास के परिणाम स्वरूप 1078 गाँव टेलीफोन सुविधा प्राप्त कर चुके हैं। यहाँ टेलीफोन सुविधाओं में सर्वाधिक वृद्धि लालसोट, दौसा एवं बांदीकुई पंचायत समितियों में हुई। महुवा एवं सिकराय पंचायत समितियों में टेलीफोन सुविधाओं का विकास स्तर निम्न रहा है । अध्ययन क्षेत्र में उद्योगों की संख्या में वृद्धि हुई उसके साथ ही टेलीफोन सुविधाओं का भी विकास हुआ है ।

परिवहन सुविधा :–

अध्ययन क्षेत्र दौसा जिले में संचार क्रांति के साथ साथ परिवहन सुविधाओं में भी वृद्धि देखी गई है। वर्ष 1991 में 115 गाँव परिवहन सुविधा से जुड़े हुए थे। 2001 में 205 गाँव परिवहन सुविधा प्राप्त कर चुके हैं। वहीं वर्ष 2011 में औद्योगिक विकास के परिणाम स्वरूप 344 गाँव परिवहन सुविधा प्राप्त कर चुके हैं। अध्ययन से स्पष्ट है कि यहाँ परिवहन सुविधाओं में सर्वाधिक वृद्धि लालसोट, दौसा एवं बांदीकुई पंचायत समितियों में हुई। महुवा एवं सिकराय पंचायत समितियों में परिवहन सुविधाओं का विकास स्तर निम्न रहा है । उद्योग विकास व परिवहन सुविधाओं के मध्य घनिष्ठ सम्बंध है ये एक दूसरे के पूरक है जैसे अध्ययन क्षेत्र में जैसे जैसे उद्योगों की संख्या में वृद्धि हुई उसके साथ ही परिवहन सुविधाओं का भी विकास हुआ है ।

बैंकिंग सुविधा :–

अध्ययन क्षेत्र में स्थानीय आधार पर बैंकिंग सुविधा प्रदान करना विकास का एक महत्वपूर्ण घटक है। वर्ष 1991 में 23 गाँव बैंकिंग सुविधा से जुड़े हुए थे। 2001 में 51 गाँव बैंकिंग सुविधा प्राप्त कर चुके हैं। वहीं वर्ष 2011 में औद्योगिक विकास के परिणाम स्वरूप 139 गाँव बैंकिंग सुविधा प्राप्त कर चुके हैं । वर्ष 2001 उच्च बैंकिंग सुविधाएँ लालसोट, दौसा एवं बांदीकुई पंचायत समितियों थी । सिकराय पंचायत समिति में बैंकिंग सुविधाओं का विकास स्तर मध्यम रहा है । महुवा पंचायत समिति में बैंकिंग सुविधाओं का विकास स्तर निम्न रहा लेकिन 2011 में उद्योगों के विकास के साथ – साथ बैंक सुविधाओं का विकास हुआ । वर्ष 2011 में उच्च बैंकिंग सुविधाएँ महुवा, दौसा एवं सिकराय पंचायत समितियों में थी । बाँदीकुई एवं लालसोट पंचायत समिति में बैंकिंग सुविधाओं का विकास स्तर मध्यम रहा है । अध्ययन क्षेत्र में उद्योगों की संख्या में वृद्धि हुई उसके साथ ही बैंक सुविधाओं का भी विकास हुआ है ।

कृषि सहकारी समितियाँ :–

अध्ययन क्षेत्र में स्थानीय आधार पर किसानों को कृषि सहकारी समितियाँ सुविधा प्रदान करती हैं । यह कृषि एवं उद्योग विकास का एक महत्वपूर्ण घटक है। वर्ष 1991 में 32 गाँव कृषि सहकारी समितियाँ की सुविधा से जुड़े हुए थे। 2001 में 85 गाँव कृषि सहकारी समितियाँ की सुविधा प्राप्त कर चुके हैं। वहीं वर्ष 2011 में औद्योगिक विकास के परिणाम स्वरूप 150 गाँव कृषि सहकारी समितियाँ की सुविधा प्राप्त कर चुके हैं । वर्ष 2018 में 177 गाँव कृषि सहकारी समितियों की सुविधाएं प्राप्त कर चुके हैं । वर्ष 2001 कृषि सहकारी समितियाँ की सुविधाएँ बाँदीकुई पंचायत समिति में 18 थी । महुवा, सिकराय व लालसोट पंचायत समितियों में कृषि सहकारी समितियाँ की सुविधाओं का विकास स्तर मध्यम रहा है । दौसा पंचायत समिति में कृषि सहकारी समितियाँ की सुविधा 16 थी लेकिन 2011 में उद्योगों के विकास के

साथ – साथ कृषि सहकारी समितियाँ की सुविधाओं का विकास हुआ । वर्ष 2011 में उच्च कृषि सहकारी समितियाँ की सुविधाएँ महुवा, दौसा एवं सिकराय पंचायत समितियों में थी । बाँदीकुई एवं लालसोट पंचायत समिति में कृषि सहकारी समितियाँ की सुविधाओं का विकास स्तर मध्यम रहा है । अध्ययन क्षेत्र में उद्योगों की संख्या में वृद्धि हुई उसके साथ ही कृषि सहकारी समितियाँ की सुविधाओं का भी विकास हुआ है ।

पक्की सड़क सुविधा :–

अध्ययन क्षेत्र में स्थानीय आधार पर लघु व कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहन प्रदान करने के लिए पक्की सड़क सुविधा आवश्यक हैं । यह उद्योग विकास के साथ–साथ सामाजिक आर्थिक विकास का एक महत्वपूर्ण घटक है। वर्ष 1991 में 214 गाँव पक्की सड़क की सुविधा से जुड़े हुए थे। 2001 में 517 गाँव पक्की सड़क की सुविधा प्राप्त कर चुके हैं। वहीं वर्ष 2011 पक्की सड़क सुविधा घटकर 256 गाँवों में ही रह गई लेकिन वर्ष 2018 पक्की सड़क सुविधा बढ़कर में 780 गाँवों में हो गई । वर्ष 2001 पक्की सड़क की सुविधाओं का उच्च विकास स्तर लालसोट, दौसा व बाँदीकुई पंचायत समितियों में था । सिकराय पंचायत समिति में पक्की सड़क की सुविधाओं का विकास स्तर मध्यम रहा है । महुवा पंचायत समिति में पक्की सड़क की सुविधाओं निम्न विकास स्तर था । वर्ष 2011 में उद्योगों के विकास के साथ – साथ परिवहन की सुविधाओं का विकास हुआ लेकिन पक्की सड़क सुविधाओं में कमी आ गई । वर्ष 2011 में उच्च विकास स्तर पक्की सड़क की सुविधाएँ दौसा एवं सिकराय पंचायत समितियों में थी । लालसोट व बाँदीकुई पंचायत समिति में पक्की सड़क की सुविधाओं का विकास स्तर मध्यम रहा है । महुवा पंचायत समिति में पक्की सड़क की सुविधाओं का विकास स्तर निम्न रहा है । अध्ययन क्षेत्र में उद्योगों की संख्या में वृद्धि हुई उसके साथ ही पक्की सड़क की सुविधाओं का भी विकास हुआ है । सर्वाधिक रूप से महुवा, मण्डावर , सिंकन्दरा , सिकराय , बांदीकुई , लालसोट में यह सुविधा प्राप्त हैं जबकि लवाण , नांगल राजावतान , रामगढ़ पचवारा पिछडी अवस्था में है ।

ऊर्जा संसाधन :–

विकास को मापने का पैमाना वहाँ के नागरिकों द्वारा व्यय की गई ऊर्जा उपभोग से भी मापा जाता है। अध्ययन क्षेत्र में स्थानीय आधार पर लघु व कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहन प्रदान करने के लिए ऊर्जा संसाधन विकास आवश्यक हैं । यह उद्योग विकास के साथ–साथ सामाजिक आर्थिक विकास का एक महत्वपूर्ण घटक है। वर्ष 1991 में 205 गाँव ऊर्जा संसाधन की सुविधा से जुड़े हुए थे। 2001 में 919 गाँव ऊर्जा संसाधन की सुविधा प्राप्त कर चुके हैं। वहीं वर्ष 2011 ऊर्जा संसाधन सुविधा बढ़कर में 1075 गाँव में हो गई । वर्ष 2018 ऊर्जा संसाधन सुविधा बढ़कर में 1116 गाँव में हो गई । वर्ष 2001 व 2011 ऊर्जा संसाधन की सुविधाओं का उच्च विकास स्तर लालसोट, दौसा व बाँदीकुई पंचायत समितियों में था । सिकराय पंचायत समिति में ऊर्जा संसाधन की सुविधाओं का विकास स्तर मध्यम रहा है । महुवा पंचायत समिति में ऊर्जा संसाधन की सुविधाओं निम्न विकास स्तर था । अध्ययन क्षेत्र में उद्योगों की संख्या में वृद्धि हुई उसके साथ ही विद्युत वितरण की सुविधाओं का भी विकास हुआ है ।

साक्षरता :–

साक्षरता जनसंख्या की एक गुणात्मक विशेषता है जो किसी क्षेत्र के सामाजिक आर्थिक विकास का एक विश्वसनीय सूचक है। सन् 2011 की जनगणना के अनुसार जिले की सामान्य साक्षरता दर 68. 16 प्रतिशत है जो प्रदेश की औसत 66.1 प्रतिशत के करीब है। पुरूषों की यह दर 82.98 प्रतिशत है जबकि जिले में कम साक्षरता का प्रमुखकारण यहां अनुसूचित जाति एवं जनजाति की जनसंख्या की अधिकता है, जहां पर लोग कृषि कार्य में अधिकतर काम करते हैं तथा स्त्रियों के बाल विवाह होना यहां सामान्य प्रथा है। उन्हें पढ़ाई के लिये प्रोत्साहन नहीं दिया जाता है। यही कारण है कि सिकराय में साक्षरता का सबसे कम प्रतिशत है। इस प्रकार देखने स ज्ञात होता है कि दौसा जिले में साक्षरता का प्रतिशत बहुत कम है।

औद्योगिक विकास :–

वर्तमान में औद्योगिक विकास किसी क्षेत्र की रीढ होती है। दौसा जिले में वर्तमान में औद्योगिक विकास की अपार सम्भावनाएं हैं, लेकिन अध्ययन क्षेत्र में औद्योगिक अवस्थापनाओं के अभाव के कारण क्षेत्र का समुचित विकास नहीं हो पाया है। क्षेत्र में औद्योगिक इकाईयां 1991 में 30 कुटीर उद्योग एवं 10 लघु उद्योग इकाइयां थी । जो वर्ष 2001 में 164 व 56 हो गई तथा वर्ष 2011 में बढ़कर क्रमश 404 व 113 हो गई। वर्ष 2021 में कुटीर उद्योगों की सँख्या 527 व लघु उद्योगों की संख्या 142 हो गई । अध्ययन क्षेत्र की कुछ तहसीलों जैसे– बसवा बांदीकुई, सिकराय सिंकन्दरा, महुवा व दौसा जिला मुख्यालय में औद्योगिक संकेन्द्रण हो गया जबकि लालसोट, लवाण, रामगढ़ पंचवारा व नागल राजावतान तहसील औद्योगिक विकास की मुख्यधारा से विलग हो गई जिससे क्षेत्र में विकास की दर धीमी रही। सामाजिक एवं आर्थिक विकास में यहाँ के भौतिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है।

निष्कर्ष एवं सुझाव :–

दौसा जिले के असमान सामाजिक एवं आर्थिक विकास का भौतिक वातावरण पर प्रभाव एवं समस्याओं के निराकरण हेतु सुझाव प्रस्तुत करने का प्रयास शोध कार्य के माध्यम से किया जाना प्रासंगिक प्रतीत होता है, जिससे विकास के साथ–साथ अनुकूल भौगोलिक वातावरण भी बना रहे, इस दृष्टि से अध्ययन क्षेत्र में शोध का महत्त्व स्पष्टतः दृष्टिगोचर होता है। अध्ययन क्षेत्र दौसा जिले में सामाजिक व आर्थिक परिदृश्य पर लघु व कुटीर उद्योगों का सकारात्मक प्रभाव पड़ा है । अध्ययन क्षेत्र दौसा जिले में बढ़ते औद्योगीकरण के कारण जीवन शैली में परिवर्तन आये हैं । अतः दौसा जिले में मानव के सामाजिक व आर्थिक विकास के कारकों का विकास करके इसमें शिक्षा, साक्षरता, लिंगानुपात, चिकित्सा, डाकघर, संचार, औद्योगिक अवस्थापनाओं आदि का विकास करके सामाजिक एवं आर्थिक स्वरूप में सुधार किया जा सकता है।

सामाजिक एवं आर्थिक विकास वर्तमान समय की महती आवश्यकता है। विकास क्षेत्र में सभी जगह समान रूप से हो, यह भी आवश्यक है। विकास का लाभ सामाजिक क्षेत्र के हर वर्ग को मिले, यह भी आवश्यक है। जब विकास में प्रादेशिक असमानताऐं दृष्टिगोचर होती है, तब क्षेत्र का विकास अवरूद्ध हो जाता है। दौसा जिले के असमान सामाजिक एवं आर्थिक विकास का भौतिक वातावरण पर प्रभाव एवं समस्याओं के निराकरण हेतु सुझाव प्रस्तुत करने का प्रयास शोध कार्य के माध्यम से किया जाना प्रासंगिक प्रतीत होता है, जिससे विकास के साथ–साथ अनुकूल भौगोलिक वातावरण भी बना रहे, इस दृष्टि से अध्ययन क्षेत्र में शोध का महत्त्व स्पष्टतः दृष्टिगोचर होता है।

सन्दर्भ सूची :–

1. जिला आयोजना कार्यालय, दौसा ।

2. जनगणना विभाग, जयपुर ।

3. डी.आर.डी.ए., दौसा ।

4. जिला रोजगार कार्यालय, दौसा ।

5. जिला सांख्यिकी कार्यालय, दौसा ।

6. आवासीय अभियंता कार्यालय, रीको, दौसा ।

7. जिला उद्योग केन्द्र, दौसा ।

8. जिला कलेक्ट्रेट कार्यालय (राजस्व), जिला दौसा ।